



"सेफ्ट-लाइन" बिल्डिंग की छठी मंजिल पर फ्लैट नंबर 602 में रहने वाले सज्जनमंत्री को रोज़ घर में प्रवेश करने से पहले झुकते देख, कृणाल ने उनके इस व्यवहार का कारण जानने की खोज की। कारण पता चलते ही उसने अपने सभी दोस्तों को इकट्ठा किया। इस मंत्रणा के तहत सज्जनमंत्री के साथ चर्चा करने के लिए एक नया मुद्दा तैयार किया गया।

रविवार की सुबह ठीक 8:45 बजे, बिल्डिंग के सभी सदस्य **"क्वाइट हाउस"** क्लब में पहुँच गए। कड़कड़ाती ठंड के बावजूद सभी ने सुबह जल्दी उठकर ठंड का सामना किया, जिसका मुख्य कारण आज की चर्चा ही थी। युवाओं के निमंत्रण पर सज्जनमंत्री भी समय पर पहुँच गए। उस समय युवाओं की टीम भी चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार थी। ठीक 9:00 बजे, **कृणाल ने सज्जनमंत्री के सामने एक रोचक सवाल रखा:**

"अरे, सज्जनमंत्री ! आजकल कुछ जैन घरों के मुख्य प्रवेश द्वार पर भगवान की मूर्ति देखने को मिलती है, जो बिल्कुल अनुचित है। अत्यधिक ज्ञान कई बार नई परंपराएँ उत्पन्न करता है, जो परंपराएँ भविष्य में कई दोषों को जन्म दे सकती हैं। इसलिए इस नई 'मंगलमूर्ति' की परंपरा को जल्द से जल्द खत्म कर देना चाहिए।"

इस विचार को हल्के में लेते हुए सज्जनमंत्री बोले:

"कृणाल ! मेरा तुमसे सवाल है—कुछ घरों के मुख्य प्रवेश द्वार पर ही 'मंगलमूर्ति' क्यों है, सभी जैन घरों के दरवाजों पर क्यों नहीं? अधूरा ज्ञान हमें धर्म से भ्रष्ट कर देता है। 'मंगलमूर्ति' की प्राचीन परंपरा का अज्ञान तुम्हें संसार के दुःखों की नई परंपराएँ प्रदान करेगा।

इसलिए तुम्हें और प्रत्येक जैन को अपने घर-आँगन में इस प्राचीन परंपरा को जीवित रखना आवश्यक है।

"यह सुनकर सौम्य बोला:

"सज्जनमंत्री! परंपरा की प्राचीनता के नाम पर आप कई दोषों को आमंत्रित कर रहे हैं। उन दोषों में से एक मुख्य दोष यह है कि मासिक धर्म वाली बहनों की नज़र 'मंगलमूर्ति' पर पड़ने से मूर्ति की आशातना हो जाती है।"

सौम्य की बात सुनकर सभा के लोग विचारमग्न हो गए और 'आशातना' शब्द सुनकर भयभीत हुए। तब सज्जनमंत्री निर्भय स्वर में बोले:

"सौम्य! मासिक धर्म वाली बहनों को 'मंगलमूर्ति' के दर्शन मात्र से आशातना नहीं होती।"

यह सुनकर सभी अवाक् रह गए। तब सौम्य ने कहा:

"सज्जनमंत्री! आपको पता है आप क्या बोल रहे हैं? जिनालय समवसरण का प्रतीक है, इसलिए गर्भगृह में मूलनायक और परिक्रमा में तीन तरफ तीन मंगलमूर्तियाँ रखी जाती हैं। इस प्रकार, समवसरण के प्रतीक स्वरूप चतुर्मुख जिन-परमात्मा की संरचनात्मक जिनालय होता है। मासिक धर्म वाली बहन की दृष्टि यदि दूर से 'मंगलमूर्ति' पर पड़ जाए, अर्थात् दर्शन हो जाए, तो आशातना नहीं होती। हाँ, स्पर्श करें, जिनालय में जाए तो आशातना होती है, लेकिन अनायास हुए दर्शन से आशातना नहीं होती। उसी प्रकार, घर के द्वार पर स्थित 'मंगलमूर्ति' के अनायास हुए दर्शन से बहनों को आशातना नहीं लगती।"

"हाँ, इसका मतलब यह नहीं कि बहनें वहाँ चैत्यवंदन आदि क्रियाएँ करने बैठ जाएँ। और यह बात भी, सौम्य! तुम ध्यान में रखना कि इन 'मंगलमूर्तियों' का अंजन नहीं किया गया होता इसलिए। 'आशातना-आशातना' के नाम से सबको डराना नहीं चाहिए। हाँ, मासिक धर्म वाली बहनों को मोबाइल आदि में भगवान के फोटो या वीडियो नहीं देखने चाहिए। यह बात मैं यहाँ निश्चित रूप से जोड़ना चाहूँगा।"

सज्जनमंत्री की मार्मिक बात सुनकर बहनों ने राहत की साँस ली। तब सज्जनमंत्री को चुनौती देते हुए आयुष बोला:

"सज्जनमंत्री! आप बहुत भावावेश में आ जाते हैं और बिना सोचे-समझे ही सारे निर्णय दे देते हैं। अनायास हुए 'मंगलमूर्ति' के दर्शन से भले ही मासिक धर्म वाली बहनों को आशातना न लगे, लेकिन क्या कोई व्यक्ति जूते-चप्पल पहनकर प्रभु दर्शन करे तो आशातना नहीं होती?"

सज्जनमंत्री ने जवाब दिया:

"आयुष! जूते-चप्पल पहनकर मंगलमूर्ति के दर्शन नहीं करने चाहिए, लेकिन जूते-चप्पल पहने हो तो मंगलमूर्ति के दर्शन किए जा सकते हैं।"

"सज्जनमंत्री! आप सारे मनगढ़ंत नियम बनाते हैं," आयुष ने कहा। तब सज्जनमंत्री बोले:

"देखो, आयुष! जब हम चालू बस में जूते पहनकर बैठे होते हैं और रास्ते में जिनालय दिखाई देता है, तो हाथ सहज ही जुड़ जाते हैं, मस्तक सहज ही झुक जाता है और मुँह से शब्द निकल पड़ते हैं, 'नमो जिणाणं, जिअ भयाणं' महात्मा दिखाई दें तो तुरंत झुके हुए मस्तक के साथ से बोला जाता है, 'मत्थएण वंदामि'। यहाँ, दोनों घटनाओं में जूते-चप्पल पहने होने के बावजूद भी देव-गुरु की आशातना नहीं होती, बल्कि लाभ होता है।

हाँ, अगर समय हो और मन में प्रमाद करो तो अवश्य अविधिकृत आशातना होती है (प्रमाद और अज्ञानतावश अविधि हैं, लेकिन भाव उन्नत हैं तो पाप अल्प और पुण्य ज्यादा मिलता हैं और विधि + भाव दोनों हैं तो पापबंध नहीं केवल पुण्यबंध होता हैं।) और अगर दर्शन ही न करो तो उपेक्षाकृत बड़ी आशातना है।"

"संक्षेप में, यदि जूते-चप्पल पहने हों और मंगलमूर्ति-ध्वजा आदि के दर्शन करें तो दोष नहीं लगता। हाँ, यदि सुविधा हो तो जूते-चप्पल उतारने का विवेक अवश्य करना चाहिए। राजसिकवृत्ति को अपनाते हुए जानबूझकर जूते-चप्पल पहनकर यदि प्रभु दर्शन करते हैं तो दोष लगता है।"

"मैंने जो कहा, वह बिल्कुल सही है, सौम्य! शास्त्र निरपेक्ष नहीं हैं।" सज्जनमंत्री का जवाब सुनकर सभी मंत्रमुग्ध हो गए। तब प्रिंस बोला:

"सज्जनमंत्री! क्या यह मंगलमूर्ति रखना ज़रूरी है? न रखें तो क्या नुकसान है?"

सज्जनमंत्री ने जवाब दिया:

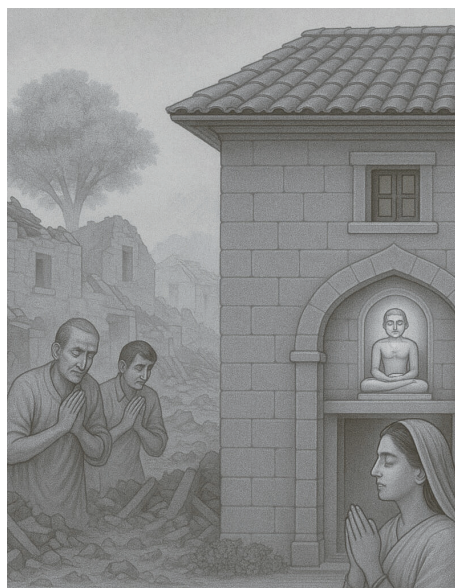
"प्रिंस! एक बार यदि गृहजिनालय न हो तो शायद चल जाए, लेकिन घर के आँगन में स्थित मंगलमूर्ति श्रावक के घर की पहचान है। उसके बिना श्रावक को कैसे चले?"

"प्रिंस! वर्तमान की दुःखद स्थिति यह नहीं कि आज जैनों के घरों में मंगलमूर्ति नहीं है, बल्कि इससे भी दुःखद यह है कि आज जैनों

के घरों में गणेशजी, बुद्ध, माताजी और बाबाजी की मूर्तियों ने प्रवेश कर लिया है। यह भूलना नहीं चाहिए कि जिनेन्द्र के अलावा अन्य देव आदि के दर्शन भी श्रावकों के लिए मिथ्यात्व का कारण बनते हैं। मिथ्यात्व अनेक दोषों का कारण, दोष दुर्गति का कारण, दुर्गति दुःख का कारण, दुःख दीनता का कारण और दीनता दीर्घ संसार परिभ्रमण का कारण बनती है।"

"आज के समय में '**सर्वधर्म समभाव**'—अर्थात् हर धर्म समान है, हर धर्म को समान न्याय देना—ऐसी मिथ्या मान्यता लुभावने रूप में सबके मन में ठोक-ठोककर बिठाई जा रही है। इसके बुरे परिणामस्वरूप आज छोटे-मोटे अवसरों (जैसे शादी आदि) से लेकर घर की सजावट के रूप में भी गणेशजी, गौतमबुद्ध आदि की मूर्तियों ने प्रवेश कर लिया है। यही मूर्तियाँ भविष्य में उनकी मान्यता को हमारे जीवन में लाने में या तो जिनेन्द्र की आज्ञा को हमारे जीवन से दूर करने में सहायक बनेंगी।"

"दूसरी बात, प्रिन्स! मंगलमूर्ति न रखने से नुकसान की तुलना में कई फायदे हैं। जिस घर के दरवाजे के मध्य भाग पर मंगलमूर्ति होती है, उस घर में प्रायः अमंगल नहीं होता। उस घर में दोषों का प्रवेश लगभग असंभव हो जाता है।"



"मथुरा नगरी में कोरोना-प्लेग से भी भयंकर उपद्रव हुआ था, जिसमें घर का निर्माण होते ही वह टूट जाता था। तब इस उपद्रव का निवारण इस छोटी-सी मंगलमूर्ति ने किया था। जिसके घर के द्वार पर मंगलमूर्ति थी, उसका घर अडिग रहा, बाकी के निर्माण होते ही टूट गए। इस प्रकार, प्रभु की मंगलमूर्ति दोषों को दूर करने के

साथ-साथ आपदाओं को भी दूर करने में सहायक बनती है।"

"संक्षेप में, श्रावक के घर की पहचान के रूप में मंगलमूर्ति घर के आँगन में होना अनिवार्य है।"

सज्जनमंत्री का जवाब सुनने के बाद युवाओं की टीम में सुपर बेस्टमेन के रूप में प्रसिद्ध सिद्धांत ने एक मजेदार प्रश्न किया:

"सज्जनमंत्री! आपकी सभी बातें विचारणीय और मननीय हैं, लेकिन मैं आपको अपने मन की एक विचारणीय बात बताता हूँ—मंगलमूर्ति पर धूल लगे या मूर्ति खंडित हो तो आशातना तो लगती ही है ना! अगर यहाँ भी आशातना न लगे तो फिर पश्चिमी धर्मों की तरह कहीं आशातना है ही नहीं और आशातना के अभाव में पाप नहीं है। अब अगर पाप ही नहीं है तो धर्म किस लिए? इस प्रकार, अगर आशातना नहीं है तो आराधना भी नहीं है, अर्थात् पुण्य-पाप कुछ भी नहीं है। इसलिए मंगलमूर्ति वास्तव में त्याज्य ही है।"

"और अगर अब आप कहें कि आशातना लगती है, तो फिर कीचड़ में गिरने से तो कीचड़ से दूर रहना ही अच्छा है। अर्थात्, जिस कारण आशातना लगती है, उस कारण को दूर करना ही श्रेयस्कर है। मूर्ति को ही दूर कर दें तो आशातना का प्रश्न ही नहीं उठेगा। संक्षेप में, मंगलमूर्ति न रखने में ही भलाई है।"

सिद्धांत के इस हेलीकॉप्टर शॉट ने युवाओं को हिला दिया। सभा के लोग भी सिद्धांत का तर्क सुनकर स्तब्ध रह गए। तब सज्जनमंत्री बोले:

"सिद्धांत! तुम्हारा तर्क तो तुम्हें ही उलझा देगा। इस प्रकार, घर में धूल भर जाए तो धूल दूर की जाती है, घर नहीं। जूते धूल वाले हो जाएँ तो धूल हटाने के लिए जूते पॉलिश किए जाते हैं, जूते फेंके नहीं जाते। और हाँ, सिद्धांत! एक निजी बात भी तुमसे पूछ लूँ—तुम्हारी पत्नी के मुँह पर धूल लग जाए तो वह धूल पानी से हटाई जाती होगी ना !! या धूल के कारण तुम पत्नी को ही दूर कर देते हो?"

सज्जनमंत्री के धमाकेदार जवाब के सामने सिद्धांत के मुँह के द्वार बंद हो गए। सज्जनमंत्री ने आगे कहा:

"सिद्धांत! पुराना-नया, नया-पुराना होना वस्तु का स्वभाव है। धूल लगे तो धूल दूर भी हो सकती है। धूल लगने से आशातना नहीं होती, लेकिन धूल को दूर करने की उपेक्षा आशातना है। हाँ, इतना निश्चित कहूँगा—द्रव्यमार्ग में सहायक तुम्हारी गाड़ी को तुम जितना संभालते हो, उससे ज़्यादा संभालने की ज़रूरत भावमार्ग में

सहायक मंगलमूर्ति को है। उसे धूल लगे ही नहीं, इसकी पूरी सावधानी हमें खुद लेनी होती है।"

"दूसरी बात, सिद्धांत! प्रतिमा खंडित हो और प्रतिमा खंडित करें—इन दोनों में फर्क है। प्रतिमा खंडित करें तो आशातना होती है, लेकिन प्रतिमा समय के साथ स्वयं जीर्णप्रायः (खंडित) हो जाए तो उस समय क्या करना चाहिए, इसका उचित मार्गदर्शन गीतार्थ गुरु भगवंतों द्वारा प्राप्त हो सकता है।"

"संक्षेप में, सिद्धांत! यह तय है कि मूर्ति खंडित हो तो एकांत में आशातना ही लगती है, ऐसा कोई नियम नहीं है और आशातना लगे ही नहीं, केवल आराधना हो, ऐसा भी कोई एकांत सिद्धांत नहीं है। यही जिनशासन की महानता है, अनेकांतमयता है। बाकी, **'कपड़े फट जाएँ इसलिए कपड़े ही न पहनें'** जैसी तुम्हारी बात, सिद्धांत! वास्तव में तुम्हारी बाल्यावस्था को ही दर्शाती है। इस प्रकार, यहाँ आराधना और आशातना सिद्ध होने से पुण्य-पाप की सिद्धि होती है और पुण्य-पाप की सिद्धि से मंगलमूर्ति की उपादेयता भी सिद्ध होती है।"

सज्जनमंत्री की चुस्त फील्डिंग के सामने सिद्धांत कैच आउट हो गया। सभा के सभी लोग उनकी मजबूत फील्डिंग देखकर अभिभूत हो गए। इस समय टीम की कमान संभालते हुए रिकेश बोला:

"सज्जनमंत्री! अगर मंगलमूर्ति आपको इतनी प्यारी है तो उसे घर के अंदर स्थापित करो ना। घर के बाहर क्यों स्थापित करते हो? डस्टबिन घर के बाहर रखा जाता है, जूते-चप्पल घर के बाहर रखे जाते हैं। उसी कतार में आप मंगलमूर्ति को घर के बाहर स्थापित करके क्या सूचित करना चाहते हैं?"

रिंकेश की बात सुनकर सभा के लोगों का मुँह खुला रह गया और उन्होंने आश्चर्य से अपना दाहिना हाथ मुँह पर रख लिया। टीम के युवा "शाबाश रिंकेश, शाबाश रिंकेश" कहकर उसका स्वागत करने लगे। सबके मन में एक ही बात घूम रही थी कि "ऐसे प्रश्न का जवाब हो ही नहीं सकता, चर्चा यहीं समाप्त करनी पड़ेगी।" फिर भी, सज्जनमंत्री ने पूरी शांति से जवाब दिया:

"रिंकेश! तुम्हारी बात बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए हास्यास्पद है। बात स्पष्ट है—करोड़पति के घर को सूचित करने वाला कोटिध्वज यदि घर के बाहरी-ऊपरी भाग में हो, राजभवन को पहचान दिलाने वाला राष्ट्रध्वज यदि भवन के बाहरी-ऊपरी भाग में हो, जिनालय को सूचित करने वाली ध्वजा यदि जिनालय के बाहरी-ऊपरी भाग में हो, तो श्रावक के घर को (परमात्मा के परिवार को) सूचित करने वाली मंगलमूर्ति घर के मुख्य द्वार की चौखट के मध्य में क्यों नहीं हो सकती?"

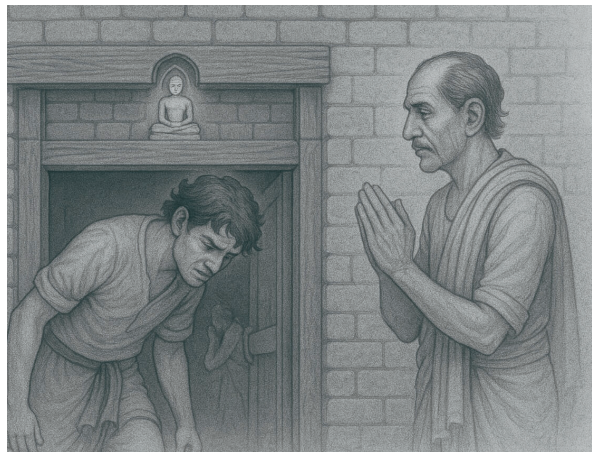
"सरदार वल्लभभाई पसंद थे तो उनकी प्रतिमा को अपने घर में स्थापित करने की बजाय मोदीजी ने वल्लभभाई की प्रतिमा को रास्ते पर क्यों स्थापित किया? इस प्रश्न की तरह, बिना गहरी सूझबूझ से किया हुआ तुम्हारा प्रश्न भी असंगत है।"

"दूसरी बात, रिंकेश! श्रावक को किसी कारणवश—कर्मोदय से—संसार में रहना पड़े, तो वह संसार उसके अनंत संसार का कारण न बने। इसलिए वह श्रावक प्रभु की दृष्टि के नीचे संसार में, अर्थात् घर में प्रवेश करता है, ताकि वह अनेक दोषों से बच सके और संसार में भी संस्कारिता बनाए रख सके। ऐसा गहरा रहस्य भी इस मंगलमूर्ति के पीछे

छिपा है। बाकी, रिकेश! जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि। जिसकी दृष्टि नीची होती है, उसे नीचे का दिखाई देता है; जिसकी दृष्टि ऊँची होती है, उसे ऊपर का दिखाई देता है।"

"घर के मुख्य द्वार पर स्थित मंगलमूर्ति क्या प्रभाव डाल सकती है, इसे स्वयंभूरमण समुद्र में रहने वाले मत्स्य के दृष्टांत से और स्पष्ट किया जा सकता है।"

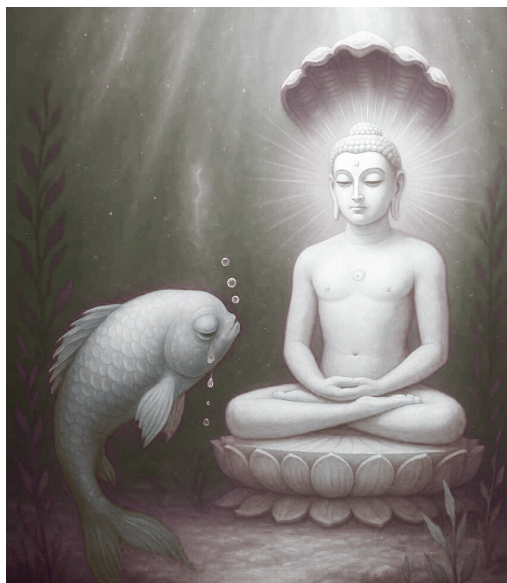
"एक पिता ने अपने बेटे को जुआ बंद करवाने हेतु बहुत प्रयास किए। उसे बार-बार जिनालय-उपाश्रय जाने के लिए प्रेरित किया, फिर भी बेटा टस से मस नहीं हुआ।



आखिर, बेटे की दुर्गति रोकने के लिए पिता ने घर का दरवाजा नीचा करवाया और दरवाजे के ऊपरी भाग (चौखट) पर मंगलमूर्ति की स्थापना की। इतना करने के बाद भी बेटा मंगलमूर्ति के दर्शन किए बिना घर में प्रवेश करता था, लेकिन दरवाजा नीचा होने के कारण उसे झुककर प्रवेश करना पड़ता था, जिससे अनायास उसे मूर्ति के दर्शन हो जाते थे।"

"जुआरी बेटा मरकर स्वयंभूरमण समुद्र में मछली के रूप में उत्पन्न हुआ। उसने वहाँ बहुत समय भटकते हुए बिताया, लेकिन एक दिन प्रतिमा आकार में स्थित मछली पर उसकी नज़र गई। उस मछली

को देखते ही उसे
जातिस्मरण (पूर्वभव का)
ज्ञान हुआ। अपना पूर्वभव
जानकर उसने अपने दोषों
की निंदा की और
संलेखना आदि करके
(अन्य मछली आदि का
भक्षण न करने का
अभिग्रह स्वीकार करके)
सद्गति प्राप्त की।"



"इसी प्रकार, घर के मुख्य द्वार पर स्थित मंगलमूर्ति के अनायास दर्शन से भी इतर धर्मी (जैन-इतर) का भी यह लोक या परलोक में कल्याण हो सकता है। इसलिए, घर के द्वार पर स्थित मंगलमूर्ति 'दहेली दीपक' न्याय की तरह (जैसे घर के द्वार पर स्थित दीपक घर के अंदर और बाहर दोनों स्थानों पर प्रकाश करता है) जैन और जैनेतर दोनों के लिए सुखदायी सिद्ध होती है।"

"इस प्रकार, रिकेश! घर के बाहर स्थित मंगलमूर्ति को मैं दीपक के रूप में सूचित करना चाहता हूँ। बाकी, जिस व्यक्ति की विचारधारा कचरा पेटी जैसी होती है, उसे हर जगह कचरा ही दिखता है, और जिसकी विचारधारा दीपक जैसी होती है, उसे हर जगह उजाला दिखता है। तुम्हारी विचारधारा कैसी है, ज़रा सोच लेना, रिकेश!"

सज्जनमंत्री की बात सुनकर सब आपस में कहने लगे, "मैं अपने घर में मंगलमूर्ति लगवाऊँगा," "मैं अपने घर में मंगलमूर्ति लगवाऊँगा।"

यह बातचीत सुनकर परेशान होकर दिलकेश बोला:

"सज्जनमंत्री! आपके जीवन में दुराग्रह बहुत भरा हुआ है। हम घर-घर तोरण, फोटो या स्टीकर दे दें तो भी चलेगा, लेकिन आपको हर जगह मूर्तियाँ ही बिठानी हैं—खर्चे ही कराने हैं।"

सज्जनमंत्री हँसते-हँसते बोले:

"अरे, दिलकेश! कम से कम तुम तोरण, फोटो, स्टीकर तक तो आए, यह जानकर मुझे खुशी हुई और तुम्हारे जैसा लघुकर्मी शीघ्र ही मूर्ति को भी स्वीकार कर लेगा, यह भी निश्चित है।"

"मूल बात, दिलकेश! यदि तुम विधि के पक्षपात को दुराग्रह कहते हो, तो वह दुराग्रह मेरे लिए दुःख का कारण नहीं बनेगा। जैसे उल्लू को सूर्य न दिखाई देने के कारण वह 'सूर्य नहीं है', 'सूर्य नहीं है' कहे, तो क्या सूर्य का अस्तित्व खत्म हो जाता है? और हाँ उल्लू के ऐसे शोर-शराबे से सूर्य को कोई दुःख भी नहीं होता।"

"दिलकेश! यह मंगलमूर्ति की विधि प्राचीन और शास्त्रोक्त है। परम-पूज्य योगीराज बुद्धिसागरसूरि महाराज तो 17 भेदी पूजा में यहाँ तक कहते हैं कि 'घर के मुख्य दरवाजे पर नीले रंग के पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए। स्टीकर, फोटो, तोरण तो अल्पकाल तक टिकने वाले हैं, जबकि पाषाणनिर्मित मंगलमूर्ति दीर्घकाल तक टिक सकती हैं और प्रभाव भी मंगलमूर्ति का शास्त्रों में बताया है, स्टीकर का नहीं।" "बात रही खर्च की, तो जहाँ मार्ग बचाना हो, मार्ग पर चलना हो, वहाँ खर्च नहीं देखना चाहिए। 'गाँवों में सड़कें बनानी हैं, लेकिन खर्च होगा, इसलिए छोड़ दो'— ऐसा सोचे तो मोदी सरकार की उन्नति टूट पड़ेगी।

खर्च की चीख-पुकार करने से पहले, दिलकेश! ज़रा अपने निजी जीवन को देख लो—कितने मौज-शौक में पैसे उड़ाते हो? और मुझे ऐसा लगता है, दिलकेश! घर-घर मंगलमूर्ति का प्रभाव बढ़ाने का तुम्हारा भाव है, इसलिए ही तुमने ऐसा प्रश्न किया होगा। अब, यदि लाभार्थी तुम्हारे जैसा हो, तो खर्च की क्या चिंता करनी!"

सज्जनमंत्री का जवाब सुनकर दिलकेश ने आखिरकार मौन धारण कर मंगलमूर्ति का शरण स्वीकार कर लिया। फिर भी, आखिर में बाजी संभालते हुए विरल बोला:

"सज्जनमंत्री! आपकी सभी बातें सही हैं, लेकिन वर्तमान में 'मंगलमूर्ति' के रूप में गणेशजी की मूर्ति प्रचलित है। अवसरों पर भी गणेशजी की मूर्ति मंगल के रूप में रखी जाती है। तो हमें विवेक कैसे करना चाहिए?"

सज्जनमंत्री ने जवाब दिया:

"विरल! बात ऐसी है कि गलत बात का यदि 100 बार प्रचार किया जाए, तो 101वीं बार वह बात सत्य लगती है, और लोग उसी ओर झुकने लगते हैं। ऐसा ही कुछ 'मंगलमूर्ति' के रूप में गणेशजी के प्रचलन में लगता है। और भी दुःख तब होता है, जब सत्य समझ में आ जाने के बाद भी असत्य का अनुसरण किया जाए।"

"मैं टुकवाडा तीर्थ में मुनिसुब्रतस्वामी के दर्शनार्थ गया था। वहाँ मंडप बन रहा था। मैंने पूछा, 'भाई! इस तीर्थ में किस चीज का अवसर है?' उस भाई ने बताया, 'कल शादी का अवसर है।' इतने में एक कर्मचारी ने मंडप के मुख्य द्वार पर गणेशजी की मूर्ति स्थापित की। मेरा हृदय वहीं काँप गया। एक तो तीर्थ का परिसर, दूसरा शादी का अवसर, तीसरा तीर्थ स्थान पर गणेशजी की मूर्ति! टुकवाडा

तीर्थ के ट्रस्टियों की लालसा और दुर्गति की ओर जाने की बिंदास भावना देखकर मेरा हृदय रो पड़ा।"

"सचमुच! अवसरों पर कुंभस्थापना मंगलरूप होती है, लेकिन उसका स्थान वर्तमान में गणेशजी, गौतमबुद्ध, माताजी आदि ने ले लिया है। मेरा उन देवी-देवताओं के प्रति विरोध नहीं है, लेकिन जैन श्रावकों का यह मार्ग नहीं है। इसलिए, विपरीत मार्ग पर जाते श्रावकों को देखकर मेरा हृदय भर जाता है। वास्तव में, प्रभु की मंगलमूर्ति या गुरु का आगमन ही उस अवसर को मंगलमय बना देता है।"

सज्जनमंत्री बात कर रहे थे, तभी चिंतन अपनी जगह से उठकर दौड़ता हुआ गेट की ओर चला। कई लोगों ने उसे वहीं रोक लिया। सज्जनमंत्री ने जाने का कारण पूछा, तो वह बोला:

"अज्ञानता के कारण बहुत देर हो गई, अब देर नहीं करनी है। इसलिए मैं अपने घर के लिए मंगलमूर्ति तैयार करवाने जा रहा हूँ।"

यह बोलते ही सभा के लोगों ने चिंतन का स्वागत किया और सज्जनमंत्री का जयनाद शुरू कर दिया। यह घटना देखकर अन्य आठ युवाओं ने भी अपने घर में मंगलमूर्ति रखने का निर्णय लिया, और सभा के लोगों ने भी उसी निर्णय का शीघ्र अनुसरण करने की प्रतिज्ञा ली।

इस अवसर पर सज्जनमंत्री ने सभी को सलाह दी:

"आपके घर में स्थित गणेशजी, गौतमबुद्ध या माताजी की मूर्तियाँ आराधना का कारण नहीं बन रही। इसलिए उन मूर्तियों को तुरंत उचित स्थान पर प्रतिष्ठित करना चाहिए और अवसरों पर अन्य धर्मों के देवी-देवताओं की मूर्तियों की प्रतिष्ठा से बचना चाहिए।"

सज्जनमंत्री की बात कई भाग्यशाली लोगों ने वहीं स्वीकार कर अपने जीवन में अपना ली। चिंतन ने सज्जनमंत्री को उठा लिया। उसके बाद सभी ने हर्षित हृदय से विदा ली। एक बार फिर युवाओं को सज्जनमंत्री का शरण स्वीकार करना पड़ा।

लगभग पाँच दिन बाद, कई श्रद्धालुओं के घरों में मंगलमूर्ति स्थापना का उत्सव मनाया गया। मंगलमूर्ति की इस मजेदार चर्चा ने जैनों के घरों की तस्वीर को उज्ज्वल कर दिया। यह देखकर सज्जनमंत्री की आँखों में आँसू आ गए।

तो चलो, अलविदा दोस्तों! फिर मिलेंगे, नए घर में... हाँ, क्योंकि आप सबके घर में भी मंगलमूर्ति की स्थापना हो गई होगी। इसलिए अब आपको नहीं, बल्कि नए घर में बसे परमात्मा के परिवार को मिलेंगे।

अलविदा... आनंद में रहना...